International Journal of Applied Research 2024; 10(3): 06-09

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(3): 06-09
www.allresearchjournal.com
Received: 13-12-2023
Accepted: 14-01-2024

बलवीर सिंह
पी.एच.डी. शोधार्थी राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय खैर, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
बलवीर सिंह
पी.एच.डी. शोधार्थी राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय खैर, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

देश को दासता के बन्धन से आजाद कराने में राजा महेन्द्र प्रताप का योगदान (जनपद अलीगढ़ के विशेष सन्दर्भ से)

बलवीर सिंह

सारांश
जिस प्रकार 1776 का वर्ष अमेरिका के इतिहास में महत्वपूर्ण एवं युग प्रर्वतक वर्ष था। उसी प्रकार 1857 का वर्ष भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण वर्ष है। कोई भी क्रान्ति या स्वतंत्रता संग्राम जैसी घटना एक दिन का परिणाम नहीं होती। ऐसी घटनाओं की एक वृहद पृष्टभूमि होती है। अतः 1857 में विद्रोह के पीछे भी निश्चित कारण मौजूद थे। 1857 की महान घटना जिसे अंग्रेजों ने सैनिक विरोध तथा सर जैम्स औट्रम ने अंग्रेजों को उखाड़ा फैंकने वाले हिन्दू–मुस्लिम षड़यन्त्र की संज्ञा दी। वास्तव में यह अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता की पहली लंड़ाई ही थी। 1857 में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति के कारण देश में हर तरह से असन्तोष पैदा हो गया। भारतीय शासक और जनता दोनों ही अंग्रेजों के शासन से बड़े दुःखी एवं क्रुद्ध हो गये थे। उनकी घुटन ही 1857 में एक भयंकर ज्वालामुखी के रूप में फूट पड़ी। जिसने शीघ्र ही समस्त मध्य भारत को आच्छादित कर लिया। विस्फोट की प्रतिक्रिया इतनी वृहद थी कि दिल्ली के आस–पास के सभी नगर और गाँव इसके प्रभाव में आ गये। 1857 की क्रान्ति के पूर्व राष्ट्रीय घटनाओं के समानान्तर 1855–1857 के मध्य उत्पन्न सैनिक असन्तोष ही प्रमुख कारण था, जिसके फलस्वरूप क्रान्ति का यह विस्फोट संभव हुआ। ऐसा ही एक आन्दोलन (1920–22) टर्की के साथ सम्पन्न हुई सीवर्स की सन्धि के साथ खिलाफत आन्दोलन प्रारम्भ अन्तराष्ट्रीय स्तर पर हुआ। गाँधी जी ने उचित समय देखकर स्वयं को सामिल कर लिया ये हिन्दु मुस्लिम एकता का विश्वास प्राप्त कर लेना चाहते थे।

कूटशब्द : ज्वालामुखी, साम्राज्यवादी, प्रतिक्रिया

प्रस्तावना
अलीगढ़ जनपद की रचना अंग्रेजी शासनकाल में 1803 में की गई थी उसके पश्चात् कुछ वर्षों के अंतराल पर जनपद की सीमा में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गये अलीगढ़ के दिल्ली आगरा मार्ग पर स्थित होने के कारण देश में होने वाली प्रत्येक घटना का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव यहाँ पड़ता था। अलीगढ़ दिल्ली से 130 कि.मी. दक्षिणपूर्व और लखनऊ 342 कि.मी. पश्चिम में स्थित है। यह शहर पवित्र नदियाँ गंगा और यमुना के बीच दोआब क्षेत्र में स्थित है। अलीगढ़ जनपद की स्थिति (अक्षांस) 27°54′ और 28° उत्तर के बीच स्थित है। देशान्तर 78° और 78°5′ पूर्व में स्थित है।

अध्ययन क्षेत्र का उद्देश्य
प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र राष्ट्रीय खिलाफत आन्दोलन में गाँधीजी की एक नायक के रूप में भूमिका (जनपद अलीगढ़ के विशेष सन्दर्भ में) का अध्ययन करना है ताकि अध्ययन के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में गाँधीजी के बलिदान, त्याग तथा उन्होंने जनता में राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने की कला व देशभक्ति का उदय का अध्ययन करना है।

विधितंत्र
प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु इतिहास का संकलन विभिन्न स्रोतों से प्रयास किया गया है। इतिहास का संकलन प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों से किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों (इतिहास) का संकायन प्रश्नावली व साक्षात्कार विधि से भी किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय
प्रथम विश्व युद्ध में मुस्लिम राष्ट्र टर्की ने अंग्रेजों के विरूद्ध और जर्मनी के पक्ष में भाग लिया टर्की की ब्रिटिश विरोधी नीति के कारण भारतीय मुसलमानों का चिन्तित होना स्वाभाविक था। अतः ब्रिटिश सरकार ने भारतीय मुसलमानों का सहयोग लेने के उद्देश्य से यह आश्वासन दिया कि विश्व युद्ध

समाप्त होने के पश्चात् टर्की की अखण्डता को बनाये रखा जायेगा। किन्तु युद्ध में टर्की व जर्मनी की पराजय के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने अपने आवश्वान पर कोई ध्यान नहीं दिया। 15 मई 1920 को टर्की के साथ सम्पन्न हुई सीवर्स की संधि के फलस्वरूप टर्की साम्राज्य को छिन्न–भिन्न कर दिया तथा सुल्तान का खलीफा पद समाप्त कर दिया गया। टर्की के सुल्तान और खलीफा की धार्मिक प्रतिष्ठा और लौकिक अधिकारों को बनाये रखने तथा टर्की सहित सभी मुस्लिम राष्ट्रों की प्रभुता की सुरक्षा करने के उद्देश्य से मुसलमानों ने अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर खिलाफत आन्दोलन को प्रारम्भ किया। गांधी जी ने उचित अवसर देखकर स्वयं को खिलाफत आन्दोलन से सम्बद्ध कर लिया। उन्होंने खिलाफत को हिन्दु मुस्लिम एकात को मजबूत बनाने का स्वर्णिम अवसर–समझकर भारत के करोड़ों हिन्दुओं का आहवान किया कि वे अपने मुस्लिम भाईयों की सहायता के लिए आगे आयें और सरकार को सहयोग करना बन्द कर दें। गांधी जी को पूर्ण विश्वास था कि मुसलमानों का पक्ष न्याय संगत है। उन्होंने खिलाफत आन्दोलन का समर्थन करने के औचित्य के प्रश्न पर स्पष्टीकरण देते हुए कहा था। ''यह मेरी नैतिक जिम्मेदारी की भावना है जिसने मुझे खिलाफत की समस्या का समर्थन करने तथा मुसलमानों का साथ देने के लिए प्रेरित किया है। यह बिल्कुल सही है कि मैं हिन्दु–मुस्लिम एकता में सहयोग कर रहा हूँ और उसे प्रोत्साहित कर रहा है।'' अंग्रेजों के खिलाफ किसी प्रकार का आन्दोलन प्रारम्भ करने से पूर्व महात्मा गाँधी हिन्दू–मुस्लिम एकता का विश्वास प्राप्त कर लेना चाहते थे। अतः मुसलमानों द्वारा उनके नेतृत्व की स्वीकृति खिलाफत हेतु आवश्यक थी। गांधी जी के लिए भारत के मुसलमानों को असहयोग आन्दोलन की और आकर्षित करने के लिए भी खिलाफत आन्दोलन की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

अध्ययन क्षेत्र

खिलाफत आन्दोलन का जन्म– खिलाफत का आशय था खलीफा की सत्ता की पुर्नस्थापना का आन्दोलन खिलाफत का प्रश्न इस तथ्य पर आधारित था कि टर्की का सुल्तान मुसलमानों का सर्वमान्य खलीफा था। प्रथम विश्व युद्ध की अवधि में तुर्क साम्राज्य का शासक सुल्तान अब्दुल हमीद द्वितीय ही मुसलमानों का खलीफा था। भारत के मुसलमान भी उसे अपना खलीफा अर्थात् धर्म गुरू मानते थे। सामान्यतः इन मुसलमानों की निष्ठा खलीफा के राज्य के प्रति होती थी, उस राष्ट्र के प्रति नहीं जहां के वे नागरिक हैं।

खिलाफत आन्दोलन और अलीगढ़

अलीगढ़ में 1921–22 के असहयोग आन्दोलन के कर्णधार तसददुक अहमद शेरवानी, अब्दुल मजीद, ठा. मलखान सिंह, ठा० टोडरसिंह, मो0 हाफिज उस्मान, इन्द्र वर्मा, पं0 लक्ष्मी नारायण शर्मा और तोताराम राठी आदि प्रमुख थे। आन्दोलन के कार्यक्रम में गांधीजी ने निषेधात्मक एवम् रचनात्मक दोनों ही पक्षों पर जोर दिया । निषेधात्मक पक्ष के अर्न्तगत, विदेशी माल का बहिष्कार, न्यायालयों का बहिष्कार, सरकारी उपाधियों व पदों का त्याग आदि कार्यक्रमों को पूरा करने में अलीगढ़ की जनता ने राष्ट्रीय जोश व उत्साह के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया तथा रचनात्मक पक्ष के अर्न्तगत राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना, निजी पंचायतों की स्थापना, स्वदेशी का प्रचार, हथकरघा उद्योग को प्रोत्साहन तथा अस्पृश्यता का अन्त आदि कार्यक्रमों में भी जनता ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया सम्पूर्ण जनपद का आन्दोलन इन्हीं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में ही केन्द्रीभूत रहा ।

चूँकि प्रथम विश्व युग के बाद ब्रिटेन ने टर्की के सुल्तान के अधिकार छीन लिए थे जो सम्पूर्ण विश्व के मुसलमानों का खलीफा था अतएवः मुसलमानों ने अंग्रेजों के खिलाफ खिलाफत आन्दोलन चलाने का निश्चय किया। मौलाना मोहम्मद अली अपने साथियों के साथ कांग्रेस में सम्मिलित हो गये एवम् महात्मागांधी ने भी खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया। खिलाफत आन्दोलन के सम्बन्ध में जो व्यूह रचना हुई थी उसमें इलाहाबाद में 3 जून की खिलाफत समिति की बैठक में कुछ प्रस्ताव पास हुए थे–

प्रस्ताव नं0 1– यह बैठक केन्द्रीय खिलाफत समिति के अनुरूप असहयोग आन्दोलन पर पुनः विश्वास व्यक्त करती है और आन्दोलन को अविलम्ब कार्य रूप देने के लिए एक उपसमिति निम्न लिखित सज्जनों के नेतृत्व में नियुक्त करती है। महात्मा गांधी, मौ० अबुल कलाम आजाद, मौलाना मुहम्मदअली, श्री अहमद, हाजी सिद्दकी खत्री, मौलाना शौकतअली, डा० किचलू और मौलाना हसरत मौहानी ।

प्रस्ताव नं0 2– यह बैठक निश्चय करती है कि स्वदेशी आन्दोलन देश में पूरी ईमानदारी से चलाने के लिए निम्न सज्जनों की एक उप समिति बनायी जाये– श्री छोटानी, महात्मा गांधी, मौलाना हसरत मोहानी, डा० किचलू, मौलाना जफर अली खाँ, आगा खाँ, सफदर खाँ, सैयद अब्दुल, मू० युसूफ शरीफ, ताजुद्दीन मसीहल्मुल्क, लाला शंकरलाल, मौ० शाह सुलेमान, मौलाना शौकत अली, श्री उमर सोबानी, अब्दुल–बदूद अहमद, हाजी सिद्दीकी खत्री, जहूर अहमद शेख, अबुलकलाम आजाद, मौलाना अकरम खां, मौलाना एवम् मुनीरूज्जमां याकूब हुसैन।

खिलाफत आन्दोलन (1920–22) की अवधि में अलीगढ़ में प्रायः उक्त सभी नेताओं का आगमन हुआ, और उन्होंने यहां विशाल जनसभाओं को सम्बोधित कर लोगों का आहवन किया कि वे राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लें अलीगढ़ में 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बाद खिलाफत आन्दोलन में ही हिन्दू–मुस्लिम एकता की प्रबल राष्ट्रीय लहर प्रवाहित हुई थी ।

खिलाफत आन्दोलन में गाँधी जी की एक नायक के रूप में भूमिका

12 अक्टूबर 1920 को गांधीजी का खिलाफत आन्दोलन के नेताओं के साथ अलीगढ़ आगमन हुआ।

उनके साथ जनपद में आये नेताओं में मुहम्मद अली, शौकत अली सत्यदेव परिब्राजक आदि उल्लेखनीय हैं। जनपद में गांधीजी के सभास्थल व आंयोजनों की सम्पूर्ण व्यवस्था रमाशंकर याज्ञनिक ने संभाली थी इस अवसर पर गांधीजी ने विशेष रूप से छात्रों व महिलाओं को राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

23 नवम्बर 1920 को गांधीजी खिलाफत समिति की एक सभा में सम्मिलित होने हेतु पुनः अलीगढ़ आये गांधीजी से निर्देश प्राप्त करने हेतु जनपद के युवा छात्र तोताराम राठी, भूदेव शर्मा, राजेन्द्र शर्मा आदि मिले और उन्होंने गांधीजी के निर्देशानुसार समस्त जनपद की अधिकांश तहसीलों में 'स्वराज आश्रम' स्थापित कर दिये थे।

गांधीजी के चुम्बकीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जनपद के तसददुक अहमद शेरवानी, रव्वाजा अब्दुल मजीद, बाबू हनुमान प्रसाद माथुर व बाबू विशम्भर सहाय आदि ने वकालत का पेशा त्याग कर राष्ट्रीय आन्देलन में सक्रिय भाग लेने का निश्चय किया। नागपुर कांग्रेस के बाद ही जनपद में कांग्रेस कमेटियों की स्थापना की दिशा में सक्रिय कार्य हुआ था जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तसददुक अहमद शरेवानी व मंत्री भू–देव शर्मा थे। अलीगढ़ की दो हस्तियां– हाफिज मुहम्मद उस्मान और सैयद अहमद हादी ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित होकर बल प्रदान किया।

गांधीजी के आहवान पर अलीगढ़ में खिलाफत आन्दोलन को गति प्रदान करने और उसमें एम० ए० ओ० कालेज के छात्रों, प्रवक्ताओं एवम् प्रबन्धमण्डल के सदस्यों को शामिल करने का दायित्व मोहम्मद अली व शौकत अली बन्धुओं ने उठाया। जनपद के मुसलमानों को अली बन्धुओं ने बार–बार यह समझाने की कोशिश

की कि खलीफा की सुरक्षा और उसके अधिकारों को हस्तक्षेप मुक्त रखे जाने हेतु ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाना समय की आवश्यकता है। और इसके लिए देश के अन्य मुसलमानों के समान अलीगढ़ के मुसलमानों को भी बिना किसी भेदभाव के ब्रिटिश सरकार का विरोध करना चाहिए तथा यह विरोध भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आहवान के अनुरूप खिलाफत आन्दोलन में पूर्ण सहयोग करके ही दिया जा सकता है। अली बन्धु एम० ए० ओ० कालेज के प्रबन्ध तन्त्र के विरोध के कारण अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके।

किन्तु कालान्तर में अलीगढ़ के छात्रों एवम् प्राध्यापकों का एक वर्ग महात्मा गांधी के आहवान पर टर्की सुल्तान की रक्षा हेतु संचालित खिलाफत आन्दोलन में जोश के साथ शामिल होने को स्वतः स्फूर्त हुआ। एवम् कालेज प्रशासन के विरोध के बावजूद इन छात्रों ने आन्दोलन के अन्तर्गत संचालित समस्त कार्यक्रम एवं आयोजनों में खुलकर भाग लिया। इससे अन्ततः यूनिवर्सिटी के राजभक्त वर्ग की स्थिति कमजोर हुई तथा उनके न चाहते हुए भी गांधीजी एवम् अलीबन्धु कालेज के छात्रों को राष्ट्रीय आन्दोलन में अपने साथ लाने में सफल हुए। उल्लेखों से ज्ञात होता है कि कालेज के राजभक्त लोगों द्वारा खिलाफत आन्दोलन को असफल बनाने हेतु अपने स्तर से शौकत अली को उनके राष्ट्रीय कार्यो में भाग लेने एवम् गांधीजी को खिलाफत का नेतृत्व करने हेतु बदनाम करने के लिए भाषण छपवाये गये थे, फिर भी गांधीजी अलीगढ़ आये और अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हुए।

जैसा कि उल्लेखनीय है अली बन्धुओं के विरूद्ध धार्मिक भावनाओं को जागृत करने हेतु राजभक्त वर्ग द्वारा यह छपवाया गया कि "Had not the Prophet had came to an end, Gandhiji would have been a prophet" ''यद्यपि कि अभी पैगम्बरवाद समाप्त नहीं हुआ है तथापि गांधीजी पैगम्बर के रूप में सामने है।'' इसी प्रकार शौकत अली के सूरत में दिए गए भाषण को इस प्रकार प्रचारित किया गया'' The Muslim behieve that of the time of crisis on Islam, Imam Mehdi would appear and deliver the message of god through our the world Bar of present in his place Gandhi had arrived" जेसा कि मुसलमानों का विश्वास है कि इस्लाम पर संकट के समय इमाम मैंहदी संसार को ईश्वर के बारे में बताएगें, किन्तु वर्तमान में तो गांधीजी ऐसा कर रहे हैं।

अपने रचनात्मक कार्यक्रम के अर्न्तगत गांधीजी ने अलीगढ़ में अलीगढ विश्व–विद्यालय के अलीगढ राष्ट्रीय विश्व–विद्यालय की स्थापना पर जोर देना प्रारम्भ किया। खिलाफत के प्रश्न पर मुस्लिम जन भावना पहले ही अंग्रेजों के खिलाफ हो चुकी थी, अतः गांधीजी को इस सम्बन्धं में जनमत तैयार करने में कोई खास कठिनाई नहीं हुई। उक्त राष्ट्रीय शिक्षण संस्था की स्थापना के औचित्य को सिद्ध करने के लिए गांधीजी ने 14 अक्टूबर व 25 अक्टूबर 1920 को क्रमशः अलीगढ कालेज के ट्रस्टियो के नाम 'अलीगढ' शीर्षक के अर्न्तगत दो पत्र लिखे थे जिनका भाव निम्न प्रकार है ।

मैने (मोहन दास करमचन्द गांधी) ने पवित्र उलेमा वर्ग की सलाह ले ली है, और उनका कहना है कि जिस सरकार ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पवित्र खिलाफत को नष्ट करने का प्रयत्न किया है कोई भी धर्मनिष्ट मुसलमान उस सरकार से न कोई सहायता लेगा और न उसे कोई सहायता देगा। अतः हमें अपने सभी घरेलू मामले आपसी मेल–जोल से ही सुलझाने चाहिए और आपको कम से कम इतना तो करना ही चाहिए कि अलीगढ़ संस्था की सरकार से मिलने वाला अनुदान लेने से इन्कार कर दें, अपनी महान संस्था को सरकारी नियन्त्रण से स्वतन्त्र बना लें और मुस्लिम विश्व विद्यालय के लिए मिला हुआ अधिकार पत्र लौटा दें। इसलिए मेरा विचार है कि यदि आप अपनी चर्चाओं में मुझे शामिल करें तो मुझे प्रसन्नता होगी। किन्तु आप मुझे बुलायें या न बुलायें, फिर भी कृपया करके घरेलू मामलो के बीच सरकार को हरगिज हस्तक्षेप न करने दीजियेगा ।

गांधीजी ने अपने दूसरे पत्र में लिखा था कि यद्यपि अलीगढ़ विश्व विद्यालय एक पुरानी संस्था है और इसने देश को अली बन्धुओं जैसी महान विभूतियां दी है एवम् यह भारत में मुस्लिम संस्कृति का केन्द्र भी है किन्तु मैं इसके तत्कालीन स्वरूप को नष्ट करना चाहता हूँ, मैने अलीगढ़ विश्व विद्यालय ही नहीं बनारस हिन्दू विश्व–विद्यालय, खालसा कॉलेज जो सिख संस्कृति का भारत में एक मात्र केन्द्र है के भी वर्तमान स्वरूप को नष्ट कर उसके स्थान परराष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करना चाहता हूँ ।

गांधीजी द्वारा सरकारी शिक्षण संस्थाओं के बहिश्कार करने के कार्यक्रम से प्रेरित होकर छात्रों ने शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार कर दिया, इस कारण छात्रों के माता–पिता को उनके भविष्य की चिन्ता और आशंका हुई अतः गांधीजी ने 3 नवम्बर 1920 को ष्यंग इण्डियाश में अलीगढ़ के छात्रों के माता–पिता के नाम एक लेख में विदेशी शासन को आसुरी तत्वों से परिपूर्ण बताते हुए सरकारी स्कूलों के बहिष्कार को दासता से मुक्ति प्राप्त करने के लिए अनिवार्य बताया था ।

सरकारी शिक्षा को त्याग कर राष्ट्रीय शिक्षा अपनाने से सम्बन्धित गांधीजी के क्रान्तिकारी विचारों को अभिव्यक्त करने वाले उक्त पत्रों की प्रष्ठभूमि में अलीगढ़ नेशनल यूनीवर्सिटी जिसे आजकल "जामिया मिलिया'' के नाम से जाना जाता है की स्थापना हुई थी खिलाफत आन्दोलन में अलीगढ़ विश्व–विद्यालय या अन्य कॉलेजों के जिन छात्रों ने सरकारी शिक्षण संस्थाओं के बहिष्कार कार्यक्रम के अन्तर्गत बहिष्कार किया था, वे इस राष्ट्रीय शिक्षण संस्था में प्रविष्ट हुए थे। इसकी स्थापना में मौलाना मुहम्मद अली ने बड़ा परिश्रम किया तथा इस पुनीत कार्य में मौ० शौकत अली, तसददुक अहमद शेरवानी, हाजी मूंसा खाँ ने तथा नबाव अमीर खां ने भी अपना पूरा सहयोग प्रदान किया था इस संस्था के प्रथम प्रिसिंपल मौलाना अहमद अली थे

निष्कर्ष

भारत में चले इस आन्दोलन का महत्व कई कारणों से धीरे–धीरे कम होता गया और इसका स्थान असहयोग आन्दोलन ने ले लिया एवम् स्वयं ब्रिटिश सरकार की नीति टर्की के प्रति कुछ सुधारात्मक हो गई थी तथा 29 अक्टूबर 1923 को मुस्तफा कमालपाशा ने स्वयं टर्की को धर्म निरपेक्ष गणतन्त्र घोषित कर दिया, जिसके कारण खिलाफत आन्दोलन का कोई महत्व ही नहीं रह गया।

यद्यपि यह आन्दोलन भारत में समाप्त हो गया तथापि इस आन्दोलन ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नई दिशा प्रदान की जिसके फलस्वरूप देश में हिन्दू–मुस्लिम दोनों ही राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लेने लगे, इस से महात्मा गांधीजी को भी प्रसिद्ध मिली और वे आगे राष्ट्रीय आन्दोलन के कर्णधार बन गये, देश के साथ ही जनपद से भी यह आन्दोलन समाप्त हो गया। किन्तु इस आन्दोलन ने जनपद वासियों को एक नई स्फूर्ति व उमंग देश को स्वतन्त्र कराने के लिए प्रदान की राजभक्त वर्ग को करारी पराजय दी एवम् अलीगढ़ में जामिया मिलिया जैसी स्वदेशी संस्था की स्थापना हुई। इस सब का श्रेय खिलाफत आन्दोलन को ही जाता है।

ऐसे अनेको आन्दोलन देश भर में हुए। खिलाफत आन्दोलन का देश पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। जिससे देश को एक नई दिशा मिली थी।

संदर्भ

1. स्मारिका स्वतन्त्रता स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति जनपद अलीगढ़ 15 अगस्त 1998 पृष्ठ–34
2. मोहम्मद हबीब एण्ड के० ए० निजामी (सम्पादक), ''कॉम्प्रीहैन्सिवहिस्ट्री ऑफ इण्डिया जिल्द 5'', ''द दिल्ली सल्तनत'' नई दिल्ली 1970 पृष्ठ–167

3. स्मारिका– स्वतन्त्रता स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति जनपद अलीगढ़ 15 अगस्त 1998 पृष्ठ–34
4. इलियट एण्ड डाउसन ''द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्डवाई इट्स ओन हिस्टोरियन'' जिल्द दो इलाहाबाद 1964 पृष्ठ– 222
5. जे० एम० सिद्दीकी – ''अलीगढ़ डिस्ट्रिक्ट'' ए हिस्टोरीकल सर्वे॰ नई दिल्ली 1981 पृष्ठ– 48
6. मोहम्मद हबीव एण्ड के० ए० निजामी (सम्पादक)– ''कॉम्प्रीहैन्सिव हिस्ट्री ऑफ दण्डिया जिल्द 5'', ''द दिल्ली सल्तनत'', नई दिल्ली 1970 पृष्ठ – 250–251
7. इलियट एण्ड डाउसन– ''द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड वाई इट्स ओन हिस्ट्रोरियन्स'' जिल्द दो इलाहाबाद 1964 पृष्ठ – 343
8. ई० टी० एट किंसन– ''स्टेटिस्टीकल, डेसक्रिटिप्टव एण्ड हिस्टोरीकल एकाउण्ट ऑफ (अलीगढ़ डिस्ट्रिक्ट) इलाहाबाद'' 1875 पृष्ठ– 485
9. ''ई0 टॉमस क्रानिकल्स ऑफ द पठान किंग्स ऑफ देहली'' लन्दन 1871 पृष्ठ– 129
10. जे0 एम0 सिद्दीकी – ''अलीगढ़ डिस्ट्रिक'' ए हिस्टोरीकल सर्वे॰ नई दिल्ली 1981 पृष्ठ– 54